तमिळ विरासत में काशी

सत्यमेव जयते

केंद्रीय शास्त्रीय तमिळ संस्थान, सेम्मोळिच चालै, पेरुम्बाक्कम, चेन्नै – 600 100

तमिऴ विरासत में काशी

केंद्रीय शास्त्रीय तमिऴ संस्थान
सेम्मोऴिच चालै, पेरुम्बाक्कम
चेन्नै – 600 100

CICT Publication No. 154

तमिऴ विरासत में काशी

© Central Institute of Classical Tamil, Chennai

Edition: First, 2023

Pages: 48

Size: Octavo 1/8

Published by

Central Institute of Classical Tamil
Chemmozhi Salai, Perumbakkam, Chennai - 600 100
Phone: 044-22540125 Email: registrar@cict.in Website: www.cict.in

Price : ₹ 30/-

ISBN : 978-81-19249-68-8

Typeset by

Central Institute of Classical Tamil

संपादकीय समिति

मुख्य संपादक

डॉ. आर. चन्द्रशेखरन

निदेशक

संपादकगण

डॉ. त. सरवणन

कनिष्ठ शोध अधिकारी

डॉ. न. पेरियसामि

कनिष्ठ शोध अधिकारी

डॉ. चि. रामचन्द्रन

कनिष्ठ शोध अधिकारी

श्रीमती म. तामरैच्चेल्वि

कनिष्ठ शोध सहयोगी

श्री क. शंकर

कनिष्ठ लिपिक

श्री ति.आ. अरुळ ओळि

तकनीकी समिति

श्री क. कार्तिकेयन, प्रोग्रामर

डॉ. इरा. अकिलन, प्रोग्रामर

श्री अ. मुरुगस्वामिनाथन, प्रोग्रामर

हिंदी अनुवाद

श्री के. रामनाथन

डॉ. आर . चन्द्रशेखरन
निदेशक
केंद्रीय शास्त्रीय तमिळ संस्थान, चेन्नै.

प्रस्तावना

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन पर हमारी भारत सरकार ' एक भारत उन्नत भारत ' नारे को प्रजा के सामने रखकर ' काशी तमिळ संगमम् ' नामक महोत्सव का संचालन करती आ रही है। पावन भूमि काशी और तमिळनाडु के बीच लंबी परंपरा से आ रहे संबंध का परिचय भारत के जन को देने के रूप में और देश के रिश्तों को मजबूत करने के रूप में काशी तमिळ संगमम् नामक यह उत्सव भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा विशेष रूप से मनाया जा रहा है।

सन् 2022 नवम्बर 19 के दिन काशी तमिळ संगमम उत्सव में भारत के माननीय प्रधान मंत्रि जी ने अपने भाषण में बल देते हुए उल्लेख किया, "अमृत काल में हम से लिये जाने वाले सारे संकल्प देश की एकता और देश जन के सहयोगात्मक प्रयास द्वारा पूर्ण किये जाएँगे।" 'एक दूसरे के मन को समझ लेना' ही भारतीय संस्कृति का मूलभूत तत्व है। उसके अनुसार, सहस्रों सालों से चलती आ रही सामान्य सांस्कृतिक एकता में जीवन यापन करना ही भारत की संस्कृति है। हम सौराष्ट में स्थित सोमनाथ से लेकर तमिळनाडु के रामेश्वर तक स्थापित 12 ज्योतिर्लिंगों को हर दिन सबेरे उठते ही स्मरण करना ही अपना महान कर्तव्य मानते हैं। उसी प्रकार जलाशय में स्नान करके नमन करते समय यह मंत्र कहते हैं कि गंगा, यमुना से लेकर गोदावरी, कावेरी तक की सारी नदियों का पानी हमारे स्नान के इस जल में शामिल हों। इसका मतलब यह है कि हम भारत की सारी नदियों में स्नान करने का अनुभव करते हैं। इससे हम ने सहस्रो साल प्राचीन इस परंपरा को बल देकर, आजादी के बाद देश की एकता को एक सूत्र में बना लिया है। ये सब हमारे कर्तव्य को ध्यान दिलाने के साथ देश की एकता को भी बल प्रदान करने वाली शक्ति है। इस काशी तमिळ संगमम् में प्राप्त अमृत को युवा वर्ग अपने शोध कार्ये में ले लेना चाहिए। ये बीज देश की एकता के वट वृक्ष के रूप में विकसित होने चाहिए। 'देश की भलाई हमारी भलाई' यह महान मंत्र हमारे देश जन के जीवन का मंत्र बन जाना चाहिए। असल में यह उत्सव भारत की एकता और विशेषता का है। इसलिए काशी तमिळ संगमम् एक अद्वितीय उत्सव है।

उस ध्येय को ध्यान में रखकर पिछले साल एक महीने तक काशी तमिऴ संगमम् का उत्सव मनाया गया। उसके उद्घाटन समारोह में केंद्रीय शास्त्रीय तमिऴ शोध संस्थान द्वारा संस्कृत, हिंदी, मराठी, उड़िया, मलयालम, सौराष्टी, वाग्री बोली, बडगा, नेपाली, अरबी, उर्दु, फार्सी, ख्मेर आदि 13 भाषाओ में अनूदित तमिऴ के महान नैतिक ग्रंथ तिरुक्कुऱळ को भारत के माननीय प्रधान मंत्रि श्री नरेंद्र मोदी जी ने लोकार्पण किया था।

इस साल तमिऴ संगमम् के इस विशेष उत्सव पर केंद्रीय शास्त्रीय तमिऴ संस्थान के कर्मचारियों के महत्वपूर्ण शोध कार्य द्वारा तमिऴ, हिंदी, अंग्रेजी आदि तीन भाषाओं में 'तमिऴ विरासत में काशी' नामक यह ग्रंथ प्रकाशित किया जाता है।

इस दुर्लभ और महान अवसर को प्रदान किये भारत के माननीय प्रधान मंत्रि और माननीय शिक्षा मंत्रि आदि को मेरी ओर से तहे दिल से धन्यवाद समर्पित करना बडा गौरव मानता हूँ।

भारत की सांस्कृतिक महत्ता एवं एकता के एक उत्तम नमूने के रूप में मनाये जा रहे इस ऐतिहासिक महत्वपूर्ण उत्सव में केंद्रीय शास्त्रीय तमिऴ संस्थान का गर्व से भाग लेना बडा आनंद प्रदान करता है।

आपका

(आर. चन्द्रशेखरन)

तमिऴ विरासत में काशी

मूर्त्ति तलम् तीर्त्तम् मुऱैयाय्त् तॊडंगिऩाक्कॊर्
वार्त्तै सॊलच् चऱ्कुरुवुम् वाय्क्कुम् परापरमे।।

उक्त यह कथन तमिऴ के महान संत तायुमाऩवर का है। भारत देश विशेष रूप से पवित्र मूर्ति, पवित्र स्थल, पवित्र तीर्थ आदि तीनों के लिए प्रसिद्ध है। भारत के उत्तर में काशी और दक्षिण में रामेश्वरम स्थित होकर इस देश की उपासना में प्राचीन काल से ही एकात्मकता को स्थापित करते आ रहे हैं। उत्तर भारत में रहने वाले दक्षिण में स्थित रामेश्वरम आकर उपासना करना और दक्षिण के निवासी उत्तर में स्थित काशी में जाकर उपासना करना अपने जीवन में एक पावन कार्य मानकर करते आ रहे हैं। भोग देने में रामेश्वरम और मुक्ति देने में काशी अग्रणी रहे हैं। काशी और रामेश्वरम के बीच की दूरी अधिक होने पर भी हमारे देश में इन दोनों पवित्र स्थानों को एक करके काशी-रामेश्वरम के रूप में एक साथ जोडकर कहने की परंपरा है। इससे हम महसूस कर सकते हैं कि भारत की सांस्कृतिक राजधानी वाराणसी उत्तर और दक्षिण को जोड़ने वाला एक पुल है।

" काशी भारत के किसी विशेष क्षेत्राधिकार या अधिकार क्षेत्र के अधीन नहीं रहा और वह सार्वभौमिक रूप से भारत के सभी शासकों के अधिकार के रूप में मान्यता प्राप्त रहा था। काशी की विशेषता यह है कि वह एक ऐसा केंद्र स्थान है जहाँ विभिन्न धर्मों के दर्शन मिलते हैं और यहाँ भारतीय शिक्षा के विभिन्न पहलू एक ही स्थान पर एकत्रित होते हैं। " रवीन्द्रनाथ टैगोर का उक्त यह कथन विचारणीय है।

तमिऴनाडु के अधिकांश मंदिरों में काशी विश्वनाथ के लिए एक अलग गर्भगृह स्थापित है। तमिऴनाडु में काशी के नाम पर तॆन्काशी, शिवकाशी, वृद्ध काशी, पुष्पवऩ काशी, कडम्बवऩ काशी जैसे शहर भी हैं। तिरुप्पऩ्दाळ कासित् तिरुमडम, नगरत्तार समूह का श्री काशी नाट्टुकोट्टै नगर छत्रम आदि तमिऴनाडु के साथ काशी के गहन संबंध के प्रमाण हैं। काशी और तमिऴनाडु के बीच के संबंधों और तमिऴ साहित्यों, शिललेखों और ताम्रपत्रों में काशी के बारे में उल्लेख किये गये संदर्भों के बारे में आगे देखेंगे।

काशी यात्रा

तमिऴ के प्रसिद्ध शैव ग्रंथ देवारम में एक पूजनीय स्थान के रूप में वर्णित काशी की यात्रा करना हर एक हिंदू के जीवन की बडी इच्छा है। काशी यात्रा जाने का मतलब काशी ही नहीं बल्कि काशी के साथ रामेश्वरम भी जाना है। जो लोग काशी यात्रा पर जाना चाहते हैं उन्हें पहले रामेश्वरम जाकर वहाँ के उग्र समुद्र में डुबकी लगानी चाहिए और गीले कपड़ों सहित तीन बार समुद्र में डुबकी लगाकर उठना चाहिए। हर बार गोता लगाते समय, मुट्ठी भर रेत उठानी होती है। ऐसे ही पहली बार ली गई रेत को सेतु माधव कहकर लिंगम के रूप में बनाकर रखना चाहिए, दूसरी बार ली गई रेत को बिंदु माधव कहकर लिंगम के रूप में बनाकर रखना चाहिए और तीसरी बार ली गई रेत को वेणु माधव कहकर लिंगम के रूप में बना लेना चाहिए और उन सबको किनारे पर रखना चाहिए। फिर विभूति, चंदन, कुंकुम, बेलपत्र चढाकर और पांच अक्षर मंत्र (नमःशिवाय) का जाप करके तीनों लिंगों की पूजा करनी चाहिए। फिर केवल सेतु माधव लिंगम को लेकर सुरक्षित रखना चाहिए। उसके बाद गीले कपड़े बदल कर स्वामी रामनाथ और देवी माता पर्वतवर्धिनी को माला अर्पित करके अर्चन करना चाहिए। भगवान की पूजा करने के बाद, काशी के लिए प्रस्थान करना चाहिए। जो लोग तुरंत काशी नहीं जा सकते हैं उन्हें सेतु माधव लिंगम और कोडी तीर्थ को पूजा कक्ष में रखकर काशी जाने तक पूजा करनी चाहिए। काशी जाते समय सेतु माधव लिंगम और कोटि तीर्थ को अपने साथ ले जाना चाहिए। काशी के दर्शनार्थियों को सबसे पहले इलाहाबाद जाना चाहिए और त्रिवेणी संगम पर सेतु माधव लिंगम को विसर्जित करना चाहिए। वहाँ से थोडा तीर्थ जल लेकर अपने पास रख लेना चाहिए। फिर काशी जाकर रामेश्वरम से लाए कोटी तीर्थ से वहाँ विश्वनाथ का अभिषेक करना चाहिए। उसके बाद गया जाना चाहिए और वहाँ पितृ ऋण पूरा करके और मोक्ष दीप जलाकर अपने मृत पूर्वजों की पूजा करनी चाहिए। ऐसा माना जाता है कि इस प्रकार करने पर मृत पूर्वजों की कृपा हमें और हमारे वंशजों को प्राप्त होती रहेगी।

उसके बाद रामेश्वरम आना चाहिए। इलाहाबाद से लाये गये तीर्थ से रामेश्वरम में स्थित रामनाथ स्वामी को अभिषेक, पूजा आदि करके काशी-रामेश्वरम की यात्रा समाप्त करनी चाहिए। हिंदू लोगों का विश्वास है कि इस प्रकार करने पर ही काशी-रामेश्वरम यात्रा का पूर्ण फल प्राप्त होगा।

चितम्बरम् मौन तेसिहर् आधीनम श्रीमद् सभापति स्वामी से तमिळ में **श्री कासि यात्तिरै विळक्कम** नामक ग्रंथ सन् 1939 में रचा गया। यह ग्रंथ काशी यात्रा करने के बारे में बताने वाला एक मार्ग दर्शक है। साथ ही इसमें काशी यात्रा में जाते समय रास्ते में स्थित प्रधान मंदिरों के बारे में सूचित किये गये हैं।

तिरुक्कैलाश पंरपरा तिरुवण्णामलै आधीनम आरुमुहसुवामी से सन् 1882 में रचित **स्थल यात्रा सामान्य नियम, काशी महात्मियम** आदि किताबें काशी नगर का इतिहास, काशी यात्रा करने के लिए योग्य लोग आदि अदि-हारिहळ् नामक शीर्षक में दिये गये हैं। साथ ही यात्रा नियम, मुंडन विधि, स्नाना विधि, दर्पण विधि, तीर्थ श्राद्ध विधि, दान करना, गया का इतिहास, श्री काशी महात्मियम आदि के बारे में भी इस पुस्तक में उल्लेख किये गये हैं।

शब्दकोश और मुहावरों में काशी

काशी शब्द के लिए शब्दकोश और लोकोक्तियों में विभिन्न शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

कासिक् कंबु : बाजरा की एक फसल जो ज्येष्ठ में बोई जाती है और भाद्रपद में काटी जाती है।

कासिक् कमलम : एक प्रकार का हीरा जिसकी चमक नहीं होती।

कासिक् कल : चुंबकत्व वाला एक प्रकार का लोहा।

कासिक् कुप्पि : गंगा जल से भरी बोतल।

कासि चम्बा : एक प्रकार का धान ।

कासिच् चारम : एक प्रकार का नमक।

कासिच् चीरम : 1. छोटा जीरा; 2. सौंफ

कासि चॆम्बु : गंगा जल धारण करने के लिए आधा तांबे और आधा पीतल से बना एक बर्तन

कासि तीर्थम : काशी से लिया गया गंगा जल

कासि दुम्बै : 1. पौधा; 2. एक प्रकार का फूल

कासि पट्टु : एक प्रकार का रेशम वस्त्र।

कासि अरळि : गोल्डन कनेर

कासि अलरी : कनेर वर्ग

कासि लवणम : नमक की एक किस्म

कासिप् पार्प्पान : मछली का प्रकार (नांजिल देश का प्रयोग)

कासि कृटि : पक्षी जाति (जाफना शब्दकोश)

उपरोक्त शब्द काशी शहर और तमिळनाडु के बीच सांस्कृतिक संबंध को प्रकट करते हैं।

काशी यात्रा नामक विवाह की परिपाटी

काशी यात्रा तमिळनाडु के कुछ समाजों में मनाया जाने वाला एक विवाह अनुष्ठान है। विवाह के पहले दूल्हे द्वारा किया जाने वाले इस अनुष्ठान पर शशिवल्ली ने अपनी पुस्तक 'तमिळ विवाह' नामक किताब में निम्नलिखित का उल्लेख किया है –

इसके बारे में आमतौर पर एक संदेश सब के द्वारा बताया जाता है। अर्थात, पूर्व काल में जो विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करना चाहते थे, वे गुरुकुलवास में किसी अच्छे गुरु के पास जाते थे और पूरी तरह तरकीबें सीखते थे और फिर उनका आशीर्वाद प्राप्त करके घर लौट जाते थे। तब गुरु शिष्य से कहा करते थे, "छात्र, तुमने मेरे दिल को प्रसन्न करने के रूप में बहुत अच्छी तरह से तरकीबें सीख ली हैं। अब अपने माता-पिता के पास जाओ, गृहस्थ जीवन व्यतीत करो और अपने कर्तव्यों का पालन करो।" उसके बाद वे उसे माता-पिता के पास जाने के पहले काशी जाने और गंगा में डुबकी लगाने के लिए भेज देंगे। पुराने समय का रीति रिवाज बताता है कि जैसे ही वह छात्र जब आगे चलता तब रास्ते में कुछ लोग उसे रोकते और उनमें से कोई ऐसा कहता कि मेरी कन्या से विवाह कराता हूँ। इसी को विवाह संबन्धी कार्य प्रारंभ होने के पूर्व दूल्हा का काशी यात्रा निकलने को अनुष्ठान के रूप में प्रयोग में लाया गया। याने काशी यात्रा का अर्थ ब्रह्मचर्य धर्म में दूल्हे

द्वारा पालन किए गये बंधनों से तत्काल मुक्ति है। उसके बाद ही उसे चप्पल, छाता, थैली, आईने में देखना आदि की अनुमति दी जाती है। दुल्हन के पिता (एक शाखा में लड़की का भाई) ने काशी तीर्थ यात्रा के लिए जा रहे दूल्हे से कहता, 'अरे, अब काशी मत जाओ। मेरी लड़की से शादी कर ले और पारिवारिक जीवन चलाओ। कई वर्षों पारिवारिक जीवन चलाने के बाद, पितृ ऋण चुकाने के लिए अपनी पत्नी के साथ वहाँ जा सकते हो। दूल्हा भी बात मानकर लौट जाता है। फिर विवाह तख्त पर बैठाता, दामाद के पैर पकड़कर एक बड़ी थाली पर रख देता है और उस पर हल्दी पानी से साफ करता है और पैर के अंगूठे पर चांदी की मेथी पहनाता है। फिर वह एक नया छाता फैलाता है और दूल्हे को मंडप में ले आता है। (ससिवल्लि, **तमिळर तिरुमणम** (तमिळ विवाह), विश्व तमिळ अनुसंधान संस्थान, चेन्नै, 1985.)

काशी में कुमरगुरुपरर् का कार्य

संत कुमरगुरुपरर् ई. 17वीं शताब्दी में रहते थे। उन्होंने धर्मपुरम् आधीन के अध्यक्ष के अनुरोध पर, उत्तर भारत में स्थित काशी महा शहर को पहुँचकर वहाँ छिपे स्वामी विश्वलिंग की मूर्ति का पता लगाया और उसकी पूजा करने का उत्तम प्रबंध किया।

उन्होंने वहाँ अपनी विद्या और तपोबल के कारण दिल्ली बादशाह का सम्मान अर्जित किया। दिल्ली बादशाह से बात करने के लिए उन्हें उस देश की भाषा को जानने की आवश्यकता हुई। इसलिए उन्होंने देवी सरस्वती से प्रार्थना करते हुए **सकल कला वल्ली माला** नामक प्रबंधम की रचना की और देवी की कृपा से हिंदुस्तानी बोलने की शक्ति प्राप्त की। बादशाह ने भी उसकी इच्छा मान ली और उन्हें केदार घाट में एक मठ बनाकर काशी में रहने के लिए जगह प्रदान किया। संत कुमरगुरुपरर् भी काशी में एक मठ स्थापित करके शैव धर्म को विकसित कराने के लिए सेवा की। यह मठ आज **'श्री कुमारस्वामी मठ'** के नाम से जाना जाता है। उन्होंने तब कासित्तुण्डि विनायगर पदिगम्, कासिक् कलम्बहम आदि किताबों की रचना की थी। उन्होंने अपने मठ में एक पुराणशाला की स्थापना की और वहाँ शिव पुराण पर प्रवचन दिया। उन्होंने अपने ऐसे कार्य से शैव धर्म तथा तमिळ् का महत्व बढाया था। ऐसा कहा जाता है कि उस मठ पर स्वामी जी के कम्ब रामायण के प्रवचन से प्रेरणा पाकर श्री तुलसीदास ने अपनी रचना रामचरित मानस में स्वामी जी के विचारों को भी मिलाकर अपने पद्यों की रचना की है। श्री कुमरगुरुपरर् स्वामी ने काशी में केदार घाट और एक धर्मशाला को स्थापित

किया। उसके बाद वे वैशाग महीने में कृष्ण पक्ष के तृतीय दिन भगवान शिव की छाया में जा पहुँचे।

राजा शरभोजी का काशी में सेवा

राजा शरभोजी-दूसरा धार्मिक विषय पर गहरी आस्था रखने वाले थे। शैवावलंबियों से मुक्ति दिलाने वाले सात शहरों में एक माने जाने वाले काशी जाने के विचार से राजा शरभोजी ने 23.9.1820 के दिन 3000 लोगों के एक दल के साथ अपनी यात्रा जारी की। वह महान यात्रा समाप्त होकर 24.4.1822 के दिन तमिळनाडु के तंजाऊर आ पहुँची।

10.07.1821 को सुबह 8 बजे राजा शरभोजी काशी पहुंचे और वहाँ तिरुप्पनंदाळ् काशी मठ में ठहरे। अगले दिन उन्होंने गंगा नदी में मणिकर्णि-का घाट में स्नान किया। राजा शरभोजी ने प्रतिदिन इस मणिकर्णिका घाट में स्नान किया और उस घाट में कुछ सेवायें भी की थी। इसकी स्मृति में तंजाऊर किले के अंदर पूर्वी राजगलि पर राजा शरभोजी द्वारा एक मंदिर बनवाया गया, वह है मणिकर्णिका मंदिर। सन् 1827 में यह मंदिर बनकर तैयार हुआ और पावन किया गया। राजा शरभोजी से नये रूप में बनवाये जाने के कारण यह पुदु कोइल (नया मंदिर) भी कहा जाता है।

कहा जाता है कि इस मंदिर में मूल लिंगम और गणेश मंदिर में स्थापित और दो लिंगम काशी से लाये गये थे। (सॆ. इरासु, तंजै मराट्टियर कल्वॆट्टु-हळ (तंजौर मराठा शिलालेख), तमिळ विश्वविद्यालय, तंजाऊर, 1987, पृ. 12.)

इस प्रकार, तमिळ परंपरा में काशी (वाराणसी) ने सांस्कृतिक संबन्ध को बना रखा है।

तेसोडुम् पॊलिन्दु मुत्तित् तिरुमहळ् उऱैदल् तऩ्ऩाल्
कासि येन्ड्रुरैप्पर्।।

उक्त यह कथन कासि कण्डम् नामक किताब में है। इसमें काशी को प्रकाश के अर्थ में विस्तार से बताया गया है। यह जाना जाता है कि तमि-ळनाडु के लोगों ने अपने जीवन में प्रकाश पाने के लिए अपनी लोकोक्ति और शहर के नामों में काशी शब्द का प्रयोग किया है।

काशी का दूसरा नाम है वारणवासी, इस नाम पर तमिळनाडु के चेंग-ल्पट्टु जिले के ताम्बरम से कांचीपुरम् जाने के मार्ग में वालाजाबात नामक गाँव के निकट वारणवासी नाम पर एक छोटा गाँव बना है।

अरियलूर जिले के कीळप्पळुवूर् के निकट वारणवासी नाम पर एक गाँव है। इस गाँव में स्थित पुरातात्विक अजायबघर द्वारा प्रकट होता है कि यह स्थान करोडों साल पूर्व समुद्र के रूप में था।

काशी में स्थित भगवान विश्वनाथ जी के नाम पर 452 मंदिर, देवि विशालाक्षी के नाम पर 14 मंदिर, देवि अन्नपूरणी के नाम पर 7 मंदिर तमिळनाडु में स्थापित हैं।

ये सब तमिळनाडु और काशी के बीच के सघन रिश्ते को स्पष्ट प्रकट करते हैं।

*****

काशी (वाराणसी) के बारे में तमिऴनाडु के प्रमाण

काशी कहे जाने वाले वाराणसी के बारे में तमिळ् साहित्यों में उल्लेख किये गये पद्यों के बारे में, शिलालेख, ताम्रपत्र आदि में किये गये उल्लेख पर, काशी को प्रधान मानकर रचे गये तमिळ् साहित्यों के बारे में, काशी पर लोगों में प्रयुक्त लोकोक्तियाँ तथा मुहावरे आदि के बारे में यहाँ प्रकाश डाला गया है।

काशी (वाराणसी) के बारे में तमिऴ साहित्यों का उल्लेख - कलित्तोहै -

तेरुविन्कण् कारणम् इन्ड्रिक् कलंगुवार्क् कण्डुनी
वारणवासी पदम् पेयर्दल् एदिल।। (60: 12,13)

उपर्युक्त पद्य का अर्थ यह है कि गली में अकारण दुखित अन्य लोगों के दुख को अपना दुख मानने वाले वारणासी के लोगों के बराबर का गुण प्राप्त करना। इस वाक्य के द्वारा हम जान सकते हैं कि संगम का काव्य कलित्तोगै में वाराणसी में जीवित लोगों के उत्तम गुण का उल्लेख किया गया है।

यह संगम काल के दौरान वाराणसी और तमिऴनाडु के बीच के निकट संबंध को दर्शाता है। यहाँ उल्लेखनीय है कि काशी शहर को वाराणसी के रूप में दर्ज किया गया है।

सिलप्पदिहारम -

मत्तिम नन्नाट्टु वारणम तन्नुळ्
उत्तर कौत्तऱ्कु ऒरुमहन् आहि
उरुविनुम् तिरुविनुम् उणर्विनुम् तोन्ड्रिप्
पेरुविऱल् ताऩम् पलवुम् सेय्दांगु
ऐण्णाल् आण्डिऩ् इऱन्द पिऱ्पाटु
विण्णोर् वडिवम् पेट्रऩन् आदलिऩ्।।
(मदुरैक् काण्डम्, अडैक्कलक् कादै – 178 – 183)

इस पद्य के चरणों के द्वारा पता चलता है कि मध्य देश में वारणासी नामक नगर में राजा उत्तर कौत्तऩ के इकलौते पुत्र के रूप में सौंदर्य, संपत्ति,

उत्तम गुण सहित बडा दानी बनकर शासन कार्य में बत्तीस साल तक बिताने के बाद वह एक देवता का रूप प्राप्त किया था।

उपर्युक्त पद्य से पता चलता है कि वारणम नामक शब्द का प्रयोग वाराणसी को सूचित करने के लिए प्रयोग किया गया है।

मणिमेहलै -

वारणासि ओर् मऱैओम् बाळऩ्
आरण वुवात्ति यपंञ्चिहऩ् ऐऩ्बोऩ्। (आपुत्तिरऩ् तिऱमऱिवित्त कादै. 3,4)

वारणासि ओर् मामऱै मुदल्वऩ्
आरण वुवात्ति यरुम्पॆऱळ् मऩैवियाऩ्। (आपुत्तिरऩ् तिऱमऱिवित्त कादै. 78,79)

उपर्युक्त मणिमेखलै काव्य के पद्यों से वाराणसी में जीवन बिताया वेद पंडित अपंजिगऩ का उल्लेख प्रकट होता है।

नीलकेसि -

कासि नाट्टिऩुम् सेडिय नाट्टिऩुम् काणा। (1-44/2)

उन पद्यों में उल्लेख है कि काशी, सेडियम आदि देशों में नीलकेशी भटकती रही। इस प्रकार यहाँ भी काशी का नाम बताया गया है।

सूळामणि -

मूसिनाट् सुरुम्बु पाय मुरुहुडैन् दुक्कुञ् सोलैक्
कासिनाट्टरसऩ सॆंगोऱ् कदिर्मुडिक् कच्च ऩेऩ्बाऩ्
मासिऩाल् कडलन् ताऩै मत्तमऱ् ऱवऱ्कुत् तेवि
तूसिऩाल् तुळुम्बुम् अल्हुल् सुदञ्चऩै सुडरुम् पूणाय्।
- (तूदु विडु सरुक्कम्, 536)

समुद्र बराबर दोष रहित चार प्रकार की सेना जैसे रथ, घोडा, हाथी, सैनिक आदि को अपने साथ रखने वाला हे राजा, सबेरे ही भृंग सब मंडराते और शहद को बहाते उपवन के काशी देश का और उत्तम राजदंड तथा

चमकते मुकुट पहना राजा कच्चन् और उसकी पत्नी जो लहराते रेशम के वस्त्र से सज्जित कमर की नारी सुधंजनै जो अर्क देव से सृष्टित पाँच प्रकार के राजवंश के एक वंश में जन्म लेकर धर्म ग्रंथ के अनुसार देश की रक्षा करते कच्चन की पत्नी सुधंजनै है। इस पद्य के माध्यम से हम काशी पर शासन किये राजा कच्चन के बारे में जान सकते हैं।

ऊळिकाण् बरिय तोन्ड्र लुक्किर कुलत्तु वेन्दन्
वाळैताळ् सोलै वेलि वारण वासी मन्नन्
सूळिमा लियान्नै युन्दिच् चुडर्कुळै तिरुविल् वीस
एळ्ळैयर् कवरि वीस वेळिन्नह रिसप्पच् चेन्ड्रान्।

(सुयम्वरच् चरुक्कम् – 1787)

उपर्युक्त पद्य से पता चलता है कि वाराणसी के राजा उग्रकुल के शासक थे।

पॆरुंकदै -

कासि अरसन् कादलि मट्टु अवन् (महदक् काण्डम् – 6/173)

कासि अरसन् मासुइल् मडमगळ् (वत्तवक् काण्डम् – 15/45)

वारणवासी वळम् तन्दु ओम्बुम् (महदक् काण्डम् – 17/13)

इससे जान सकते हैं कि पॆरुंकदै में काशी, वारणवासी आदि दो नामों का उल्लेख हुआ है।

विल्लि भारदम -

कासि मन्नवन् कन्नियर् मूवरुम् - (1-123/1)

नाडि मालैयिड वन्द कासिप्पदि नल्हुम् ऑल्हुम् इडै नव्वियुम् - (1-149/3)

कासित् तलैवन् कन्नियर् तमकण् पोल् वडु मुट्रिय कन्नियै - (10-34/1)

कासि नरेसनुम् एळ् उयर् एळ् मदमारि सिन्दुम् करिमेलोर् - (44 – 11/12)

कासिमन् केमदूर्त्ति काय् अयिल् ऑन्ड्रु वांगि - (44-14/2)

इस प्रकार विल्लि भारदम नामक ग्रंथ में पाँच बार काशी का नाम उल्लेख हुआ है।

तेवारम -

मट्टूर्मड पाच्चिलाच्चिरमम् मयिण्डीच्चुरम् वादवूर् वारणासि

कट्टूर् कडम्बूर् पडम्पक्कम् कॊट्टुम् कडल् ऒट्रियूर् मट्टु उऱैयूर् अवैयुम्

(सम्बन्दर् तेवारम् – 1890. 1,2)

वाऩोर् वणंगुम् मणञ्जेरियुम् मदिल उञ्जै माहाळम् वारणासि

(अप्पर् तेवारम् – 2159. 2)

मण्णिप् पडिक्करै वाऴकॊळि पुत्तूर् वक्करै मन्दारम् वारणासि

(अप्पर् तेवारम् – 2791. 1)

शैव संत सम्बन्दर से रचित देवार में एक स्थान पर और संत अप्पर से रचित देवारम में दो स्थानों पर वारणासी का नाम उल्लेख किया गया है। उल्लेखनीय बात यह है कि देवारम में विशेष रूप से पद्य रचित स्थानों में काशी नहीं है।

पॆरिय पुरणम -

मिऩ्नु वेणियर् वारणासि विरुप्पऩोडु पणिन्दु उडऩ् - (तिरुनिऱ्ऱ सरुक्कम्. 1-353/2)

उपर्युक्त पॆरिय पुराण पद्य के चरण से पता चलता है कि संत तिरुनावुक्करसर अपनी कैलाश गिरि की यात्रा में वारणासी में रहे संतों को नमन किया था।

नालायिर दिव्यप् प्रबंधम -

कायसिऩत्त कासि मऩ्ऩऩ् वक्करऩ् पवुण्डिरऩ् - (858.1)

संत तिरुमऴिसै आऴ्वार अपने तिरुच्चन्दविरुत्तम में काशी के राजा वक्र पउत्तिरन का नाम उल्लेख किया है।

ईडु मुप्पत्ताऱायिरप् पडि -

अरै क्षणत्तिले वाराणसियै दहित्तु - (2-10-5)

तिरुवाय मोऴि के दूसरे दशक के एक पद्य में अऱ्मुयल आऴिप् पडैयवऩ् कोयिल वाक्य के लिए टीका लिखते समय भाष्यकार पॆरियवाच्चाऩ् पिळ्ळै ने वारणासी का नाम उल्लेख किया है।

तिरुप्पुहऴ् -

काळ कण्डऩ् उमापति तरुबाला
काशी गंगैयिल मेविय पॆरुमाळे - (661)

काऩ् कक्कुऱ् मादै मेविय
आऩ् सॊऱ्कुमरा परापर
कासियिऱ् प्रदाबमायुऱै पॆरुमाळे - (662)

कन्दुप् परिमयिल् वागऩ् मीदिरु
कोंगैक् कुऱ्मह ळासैयॊ डेमहिऴ्
गंगैप् पदिनदि कासियिल् मेविय पॆरुमाळे - (663)

उपर्युक्त पद्यों के चरणों में भगवान कार्तिकेय को काशी में गंगा नदी के किनारे होने वाले, काशी में प्रधान रूप में रहने वाले, गंगा के स्थान काशी में होने वाले आदि के रूप में संत अरुणगिरिनादर कहते हैं। इससे मालूम होता है कि भगवान कार्तिकेय काशी में भी होने वाले हैं।

सिवबोहसारम - गुरु आऩसम्बन्दर्

तिल्लैवऩम् कासि तिरुवारूर् मायूरम्
मुल्लैवऩम् कूडल मुदुकुऩ्ड्रम – नॆल्लैकळर्

कांजिकळुक् कुन्ड्रमऱैक् काडु अरुणै कळत्ति
वांजियमेन्, मुत्ति वरुम्।

उपर्युक्त पद्य में मुक्ति दिलाने वाले के रूप में 14 स्थानों का नाम उल्लेख किया गया है। विशेष रूप से उनमें काशी का नाम भी होना उल्लेखनीय है

तिरुविळैयाडल पुराणम् -

पुदिय तामरै मेविय पळमऱैप् पुत्तेळ्
विदियि ऩार्कडु नडैप्परि महंजेय्वाऩ वेण्डिक्
कदियै माय्न्दवर्क् कुदवुतण् डुऱैकेळु कासिप्
पदियिऩ मैन्दरो डेय्दिऩाऩ पण्डॊरु वैहल्।।

- (तिरुविळैयाडल् पुराणम्, मदुरैक् काण्डम- 16)

इस पद्य का भावार्थ यह है कि सदा विकसित कमल दल पर रहने वाला प्राचीन वेदों का ज्ञान रखने वाला भगवान ब्रह्म ने वेद नियमानुसार तेज दौडने वाले अश्व से यज्ञ करने के विचार में मुक्ति दिलाता और शीतल जल बहता काशी नामक स्थान पर एक जमाने में अपने पुत्रों साहित आया था। इस पद्य से पता चलता है कि काशी एक ऐसा तीर्थ स्थान है वह वांछित भक्तों को मुक्ति दिलाता है।

ञाऩवरोदयर् – उबदेस काण्डम् -

तॊन्ड्रुतॊट्टिरु पादहमॆलाम् अहट्टुम् सूळलाम् कासि मानहर् - (2270)

इस पद्य में ज्ञावरोदय उल्लेख करते हैं कि काशी महाशहर हमारे पूर्व पापों को मिटा देता है।

कांजिप् पुराणम -

कासियि ऩिऩड्रुम पोन्दु कम्बर्ताम् अरुळप् पॆट्टु
मासिलाक् कच्चि मूदूर मऩ्ऩि वीट्रिरुन्दु पूमेल्
आसिलात् तमिळ् परप्पि अरुन्दमिळ् कुरवु पूण्ड
तेसिऩाऩ मलय वॆऱ्पिऱ् कुरुमुनि तिरुत्ताळ् पोट्रि

उपर्युक्त कांजिप् पुराणम् के प्राक्कथन पद्य में उल्लेख किया गया है कि महर्षि अगस्त्य मुनि काशी से निकलकर कांजिपुरम आ पहुँचे थे।

सिवञाऩ् पालैय सुवामिहळ् कलम्बहम् – सिवप्रकास सुवामिहळ्

पेरुमाऩे सिवञाऩिप् पेयरुडैयोऩ् निऩ्दरुळाळ्
वरुमाऩ्मा परमुत्ति मरुवदले इयल्बाहुम्
परमाऩ्मा उरैसेय्यप् पडुकासि मदलऩ्दान्
तरुवदुनिऱ् किडैत्तिडऩे। - (85)

मुऩिप्पुलि तोऴुसिदम् बरम्कण् णुट्रवर्
मुऴैप्पुलि मुऴंगुमव् वरुणै यंगिरि
निऩैप्पवर् अमलवा रूर्प्पि ऱ्प्पवर्
निहऴ्त्तुऱु कासियिऱ् सेऩ्ड्रिऱ्प्पवर्
तऩिप्पेरु मुत्तियै अडैवर् ......। - (91)

उपर्युक्त पद्यो के वाक्य स्पषट करते हैं कि काशी में मरने पर मुक्ति मिलेगी।

तिरुवरुट्पा -

तुदिपेऱुम् कासि नहरिडत्तु अऩन्दम् तूयनल् उरुवु कोण्डु आंगण्
- (मूऩ्ड्राम तिरुमुऱै- 2538/1)

वासिक्क ऐऩ्ड्राल् ऐऩ् वाय् नोहुम् कासिक्कु

नीळ् दिक्किल आऩालुम् नेन्दु अऱिवदु अल्लदु वीण्
- (मूऩ्ड्राम तिरुमुऱै- 1962: 658,659)

इस प्रकार संत रामलिंग अडिगळार भी काशी के महत्व को बताते हैं।

वीरपाण्डिय कट्टबोम्मु कदैप्पाडल -

कासि रामेसुवरम कऩ्ऩियाकुरियुम कण्डुवारे ऩेऩ्ड्रु सोल्लि (पृ.151)

भारतीयार कविदैहळ् -

कासि नहर्प्पुलवर् पेसुम् उरैदान्
कांजियिल् केट्पदर्कोर् करुवि सॆय्वोम्
(भारतीयार्, देसिय गीदंगळ् – भारत देसम्)

उन दिनों अपने पद्य द्वारा काशी और कांजि शहर को मिलाने का प्रयास कवि सुब्रह्मण्य भारती ने किया था। वे अपने बचपन में कुछ साल तक काशी में अपनी बुआ के यहाँ रहते थे। वह घर शिव मठ के नाम से जाना जाता था। उन दिनों वहाँ उनको प्राप्त अनुभव को उन्होंने तमिळ में लिखित आऱिल ऒरु पंगु नामक अपनी कहानी में प्रकट किया है।

कविमणि – मलरुम् मालैयुम -

उयर् कासियिले नॆय्द कालमुम् पोच्चो - (895)

कुळन्दैक् कविञर् (बाल कवि) अळ. वळ्ळियप्पा -

कासिक्कुत् तात्तावुम् सॆन्ड्रवन्दार् – उडन्
कळिप्पोडु पिळ्ळैहळ् सूळ्न्दु कॊण्डार्
आसैयाय्क् कूडिये पेसुहैयिले – अंगे
आनन्दन् तात्तैवैक् केट्कलुट्रान्

अत्तैयुम् कासिक्कुच् चॆन्ड्रुवन्दाळ् – इनि
अवरैक्काय् तिन्बदे इल्लैयॆन्ड्रळ्
पाट्टियुम् कासिक्कुच् चॆन्ड्रु वन्दाळ् – इनिप्
पाहर्काय् तिन्बदे इल्लै यॆन्ड्राळ्

इप्पडिक् कासिक्कुच् चॆन्ड्रोरेल्लाम् – अंगे
एदेनुम् ऒन्ड्रिनै विट्टु वन्दार्
अप्पडि नीयुमे विट्ट दॆन्न? - तात्ता
अवसियम् कूऱिड वेण्डु मॆन्ड्रार्

कोबक्कारन् ऍन्ड्रे ऊरिलुळ्ळोर् – ऍन्नैक्
कूऱिडु वारन्ड्रो ? आदलिन्नाल्,

कोबत्तैक् कासियिल विट्टु वन्देऩ् – एऩ्ड्रे
कूऱिऩर् मऱुमॊऴि तात्तावुमे

कण्णऩुम् उडऩेये तात्ता, तात्ता – नीयुम्
कासियिल विट्टदुम् ऎऩ्ऩ ? ऎऩ्ड्राऩ्
इन्नेकम् कोबत्तै विट्टदाय्च् चॊऩ्ऩेऩे
ऎंगे गवऩमो ? ऎऩ्डुरैत्तार

मुरळियुम् तात्ता नी विट्टतॆऩ्ऩ ? – ऎऩ्ड्रे
मीण्डुम् ऒरुमुऱै केट्टिडवे
तिरुम्बवुम् कोबत्तै विटटे ऩॆऩ्ड्रे – तात्ता
सॊप्पिऩर्, मुरळियुम् ओहो ऎऩ्ड्राऩ्

अरुणऩुम् कोबुवुम् अऴहप्पऩुम् – इऩ्ऩुम्
अलमुवुम् गीता कावेरियुमे
तिरुम्बत् तिरुम्बक् केळिवदऩैक् – केट्कच्
चीऱि ऎऴुन्दार् तात्तावुमे !

वेलैयट्र वॆट्टिप् पिळळैहळा – ऎऩ्ऩ
वेडिक्कैया इंगे काट्टुहिऱीर् ?
तोलै उरित्ते ऎडुत्तिडुवेऩ् – ऎऩ्डु
सॊल्लिये कैयिल् तडियॆडुत्तार्

कोबत्तैक् कासियिले विट्टेऩॆऩ्ड्रार् – इदो
कुण्डान् तडियुडऩ् वन्ददडा!
आबत्तु! आबत्तु! ऎऩ्ड्रे सॊल्लि – उडऩ्
अऩैवरुम् ओट्टम् पिडित्तऩरे!

उपरोक्त गीत विनोदपूर्वक दादा जी को संदर्भित करता है, जिन्होंने काशी से लौटने पर भी अपने क्रोध को कभी नहीं छोड़ा।

तमिऴ्नाडु के शिलालेख और ताम्रपत्रों में काशी (वारणासी)

- तिरुप्पूर जिले के पेरुमानल्लूर में उत्तमलिंगेश्वर मंदिर के दीप स्तम्ब के नीचे 17 वीं शताब्दी का एक शिलालेख इस प्रकार है।

  "इ नित्त तऩ्मम् परिपालऩ महा नडत्तिऩ पॆरॆल्लाम् कासि रामेसुरम् सेवित्त पलऩ् पॆरुवाराहवुम्" (कोयम्पुत्तूर् जिले के शिलालेख का संग्रह 2, पृ.112)

- इरोडु जिले के हनुमानपल्ली में चिन्नम्मन पेरियाम्मन गोपुरम कलश पर पाए गए 19वीं सदी के शिलालेख में उल्लेख है कि " इन्द दरुमत्तै आऱाहिलुम् विहादम् पण्णिऩाल कासियिल् गंगैक्करैयिल काऱामपसुवैक् कॊऩ्ड्र दोषत्तिल् " (इरोडु जिला शिलालेख खंड - 1, पृष्ठ 10)
- 12.06.1761 के दिन ईरोडु में स्थित कावेरी नदी के तट पर का दर्गाह के लिए मैसूर शासक उडैयार के सेनापति रंगनाथ दिम्मरैयऩ, कन्दा-सारम् अट्टवणै, सेनाबागम्, सेरुवैकारर् आदि ने दर्गाह के लिए आने जाने वाले गरीब, फकीर आदि के लिए अन्न देने तथा वस्त्र दान करने के लिए 480 वर्ग फुट की खेती जमीन को दान में दिया था। इस पर का शिलालेख उस दर्गाह के आगे रखा गया है। उसमें ऐसा उल्लेख किया गया है, "इन्द धर्मत्तुक्कु आरामॊरुवर् विहादम् पण्णिऩाल कासि गंगैक् करैयिल् काराम पसुवैक् कॊऩ्ड्रवऩुम् तायैक् कॊऴ्त्तवऩ् तुलुक्कराऩाल् मक्काविल पऩ्ड्रियैक् कॊऩ्ड्रु तिऩ्ड्रवऩ् तायारु महळक् कॊऴ्त्तवऩ् भूमि-याहासम् कॆडुक्कुम् पुत्तिर सम्पत्तुम् इल्लाम पोमॆऩ्ड्रवाऱु।" (ईरोडु जिला शिलालेख संग्रह – 1. पृ.39)
- सॆंकुन्दर् वरलाट्रु आवणंगळ् नामक किताब में सॆ. इरासु ने उल्लेख किया है कि, सॆंकुन्दर्हळ् पिऱ ऊर्हळिल् कुडियेट्रमुम् कोयिल पणिहळुम् नामक शीर्षक में, "कासि – कोयिलुक्कुम् कोयिल माऩियत्तिर्कुम मणियम् कण-क्कुच् चमय संगति सोलैयंगिरि मुदलि महऩ् वारणवासि मुदलियै नि-यमित्तऩर।" (सॆ.इरासु, सॆंकुन्दर् वरलाट्रु आवणंगळ्, तॊऩ्निन्दिय सॆकुन्द महाजन संगम् , चेन्नै, 2009, पृ.334)
- 16.08. 1735 के दिन राजा दूसरे एकोजी द्वारा प्रकाशित ताम्रपत्र में, "आवुपायियम्माळॆऩ् किऱामताऩ तारादत्त सादऩम पण्णिक् कॊडुत्तप-डियिऩाले इदिल सॆल तरु पाषाणम् निधि निष्सेबमिरुन्दालुम् सुहत्तिले सन्दिरादित्तरुळळ मट्टुम पुल्लुम् कल्लुम् कावेरियुम् कासि रामेसुरमु-ळळ मट्टुम् आण्डु अऩुबवित्तुक् कॊण्डु अऩ्ऩदाऩच् चत्तिर धर्मम् नडप्पि-

च्चुक् कॊळळक् कडवऩाहवुम् ..... इन्द अऩ्ऩदान चत्तिर धर्मत्तुक्कु यातामॊरुवर विहादम् पण्णुहुऱार्हळो अवर्हळ् कासि रामेसुरत्तिल् काराम पसुवैक् कॊण्ण तोळत्तिले पोहक् कडवऩ्।" (सॆ. इरासु, तंजै मराट्टियर सॆप्पेडुहळ् – 50, पृ.79)

- तंजाऊर जिला कुंबकोणम के स्वामीमलै वरदरासप पॆरुमाल मंदिर में 20.01.1679 के दिन एकोसी प्रथम द्वारा प्रकशित ताम्रपत्र में 23 देशों का उल्लेख है। उन्हीं में से एक है काशी देश। " कासि देसामाऩ नन्द देसम" (सॆ. इरासु, तंजै मराठियर सॆप्पेडुहळ - 50, पृ.18)॥
- 09.06.1758 को प्रताप सिंह द्वारा प्रकाशित कोंगनेश्वर मंदिर के ताम्रपत्र में 56 देशों में से एक के रूप में भी काशि देश का उल्लेख किया गया है।

  "वस्तुवै मऱ्वाद गुणसीलराऩ् मक्षदेस माळुव देसम् महुद देसम कासि देसम।" (सॆ. इरासु, तंजै मराठियर् सॆप्पेडुहळ् -50, पृ.149)

- 06.02.1695 को, सकासी द्वारा प्रकाशित किये गये ताम्रपत्र में उल्लेख किया गया है कि, "सुबनाम योगमुम कर्जवाहरणमुम पॆट्र सुबदिनत्तिल वाराणसि महाप्रज्ञाप्रुवोर मध्य" । (सॆ. इरासु, तंजाऊर मराठियर सॆप्पेडुहळ् - 50, पृ. 29)
- 22.07.1713 को दीपाम्बाळ् बाई द्वारा प्रकाशित दीपाम्बाळपुरम वन्मीकानाथर कोइल सॆप्पेडु में उल्लेख किया गया है कि, " इन्द धरुमत्तुक्कु यादामॊरुवऩ् अनुकूलम् पण्णुहुऱाऩो अवऩ् कासियिले कोडि शिवलंग प्रदिष्टैयुम पण्णिऩ पलत्तैयुम् बह्म प्रदिष्टैयुम कोटि कन्निकादानम पण्णिन पलत्तै अडयक्कडवऩाहवुम। (सॆ. इरासु, तंजाऊर मराठियर सॆप्पेडुहळ् - पृ. 223,224)
- राजा शरभोजी द्वारा प्रकाशित तिरुमक्कोट्टै ताम्रपत्र में उल्लेख किया गया है कि, "इन्द तर्मत्तै यादामॊरुवऩ् परिपालनम् पण्णिऩवर्कल् कासियिले असुपमेदि यागम पण्णिऩ पलऩ उण्डु।" (सॆ. इरासु, तंजाऊर मराठियर सॆप्पेडुहळ् - पृ. 235)

उपरोक्त शिलालेख तथा ताम्रपत्र के प्रमाणों द्वारा देखा जा सकता है कि काशी का उल्लेख जो धर्माचरण के विरुद्ध चलते हैं उन्हे चेतावनी देने के रूप में किया गया है।

तमिळ् निघण्टु में काशी (वाराणसी)

सेन्दन् दिवाकर निघण्टु में काशी के अन्य नाम के रूप में वारणासी (5:121) का उल्लेख है।

पिंगल निघण्टु के अवनि वर्ग में काशी के अन्य नाम के रूप में वाराणसी (4:12) का उल्लेख है।

सूडामणि निघण्टु के नाम वर्ग में काशी के अन्य नाम के रूप में वाराणसी (5:41) का उल्लेख है।

उपरोक्त से काशी शहर के लिए वारणासी और वाराणसी के दो अलग-अलग नामों का उल्लेख किया गया है।

अभिधान चिंतामणि में काशी (वाराणसी) पर टिप्पणियाँ :

अभिधान चिंतामणि में काशी और वाराणसी का उल्लेख इस प्रकार है। ध्यान देने की बात यह है कि वारणासी शहर का उल्लेख वारणवसी शहर के नाम से भी मिलता है।

काशी : यह मोक्ष स्थानों में से एक है। यह गंगा से स्वयं प्रकाशमान है। यहाँ आकर ध्यान करते भक्त की इच्छानुसार भगवान शिव दर्शन देकर सिद्धि प्रदान करते हैं। सर्व संहार काल के दौरान यह स्थान भगवान शिव के त्रिशूल से अछूता रहा। इस स्थान में मरने वाले आत्मा को देवि पार्वती द्वारा सेवा सुश्रुषा करने के लिए भगवान शिव का मंत्र उपदेश करके मुक्ति दिलायेंगी। यहाँ सयिकडवियन, इयक्कर, सम्वर्धन्न आदि के द्वारा पूजित शिवलिंग, गाय द्वारा पूजित गोब्यरेगम, कपिलागारम, इरुशपत्तुवसलिंगम, पत्तिर तोय तीर्थम, इरणियकर्पेसम, कवलिन्नेच्चुरम, परलिंगम, कन्दुके-च्चुरम, सयिलेच्चुरम, संगमेच्चुरम, सुत्तिमेसम, सुक्किरेसम, सम्बुकेसुवरम, मल्लिकार्चुनम, आसान्नम, कणेच्चुरम, अकिलेच्चुम, इरामेच्चुरम, कदमपेस आदि पवित्र स्थान भी होते हैं।

इस महा स्थल में पांच कुरोसम शिव लिंगम हैं और इसे आनंद गानम कहा जाता है, जीवन देने के कारण, ब्राह्मण द्वारा ली गई रेत में प्रकट हुए शिवलिंगम के कारण यह अविमुत्तम कहा जाता है, आत्माओं को शिवानंद देने के कारण इसे आनंद गानम कहा जाता है। सर्व संहार काल के दौरान

भूतगण सब संक्षेपण हो जाने के कारण इस स्थान को मा मयान कहा जाता है। यहाँ भगवान शिव ज्योति स्वरूप में होने के कारण और मुक्ति के लिए मूल होने के कारण काशी कहा जाता है। जीव के लिए दान देने के कारण यह धर्मवान कहा जाता है। यहाँ नारी रूप धारण करके शिव के पूजन के साथ अपने को पूजन करने वाले को मुक्ति प्रदान करने का वर प्राप्त किया था।

वारणासी - यह काशी का एक नाम है। यह वरणा और असि नामक दो नदियों के बीच का स्थान है। इसलिए इस स्थान को ऐसा नाम प्राप्त हुआ। इसके दक्षिण और उत्तर में बहने वाली दो नदियाँ जो वरणै नदी काशी पहुँचने वाले के पाप को रोकता है और असि नदी अपने जल में स्नान करने वाले के पाप को मिटाने के कारण यह स्थान ऐसा नाम प्राप्त किया है। (कासि काण्डम)

वारणवासी - उग्र कुल के राजा का शहर

वारणवसि - उग्र कुल के राजा का शहर

उपरोक्त पुस्तक में दर्ज शब्दों के माध्यम से हम काशी नगर के इतिहास और उस शहर के अन्य नामों को जान सकते हैं।

*****

काशी नाम केंद्रित तमिऴ ग्रंथ

1. कासिक् कलम्बहम -

इस पुस्तक की रचना संत कुमरगुरुपरर् ने की थी। ग्रंथ की शुरुआत गणेश जी की स्तुति के साथ होती है। काशी में भगवान विश्वनाथ की कृपा, महिमा और गुण आदि के बारे में बताने के साथ यह भी बताया गया है कि यहाँ मरने वाले अमर बन जाते हैं। इस ग्रंथ में तूदु नामक अंग में, सखी अपनी नायिका के वास्ते पक्षी को प्रभु के पास दूत बनाकर भेजती है। पुयवाकुप्पु नामक अंग में भगवान की प्रभावशाली दिव्य लीला के बारे में बताया गया है। पिच्चियार, कौट्रियार आदि अंगों में आने वाले पद्यो में शिव रूप धारण करने वाले पिच्चि के कार्य से संबन्धित बातें, वैष्णव रूप धारी कौट्रि के कार्य संबन्धी विषय आदि श्लेष अलंकार के रूप में बताये गये हैं। कुमरगुरुपरर् ने अपनी भाषा तमिऴ पर के प्रेम को प्रकट करते हुए लिखा है कि, काशी नगर की समृद्धि को कौट्रियार ने अपनी प्रभावशाली तमिऴ में गाकर नृत्य किया। ऊर नामक अंग में नायक का शहर काशी की विशेषता बतायी गयी है। यह अंग इस किताब में तीन बार आया है। इस ग्रंथ में अम्मानै नामक अंग में प्रभु के कार्य को श्लेष अलंकार में प्रश्नोत्तर शैली में नाचती नारियाँ प्रकट करती हैं।

पाणाट्टुप्पडै नामक अंग ऐसा बनाया गया है कि जहाँ एक पाणऩ (चारण) ने काशी भगवान की कृपा से विपुल धन प्राप्त कर वापस आता है, तब दूसरे पाणन को उसके पास जाने के लिए कहता है। पुस्तक के अंत में, ऊर नामक अंग फिर से आता है और इस अंग में तेईस गीत हैं।

इस पुस्तक में यह उल्लेख किया जाता है कि काशी के नाम अविमुत्तम और आनंदवल्लि हैं, प्रभु विश्वनाथ के नाम अखिलेसर और काशीनाथ हैं, देवी विशालाक्षी के नाम पेरुन्तडंकण्णम्मै और आनंदवल्ली हैं। यह पुस्तक गंगा की सुंदरता के बारे में बताती है। यह पुस्तक उन पुराणों के संदेशों की व्याख्या करती है जो कि काशी में पाप करने वालों के लिए यमराज का कोई दंड नहीं है, केवल भैरव भगवान का दंड मिलता है।

2. कासित तुंडी गणेश पदिहम -

कासित् तुंडी गणेश पदिहम दस असिरियप्पा नामक एक छंद से बना है। इसकी रचना कुमरगुरुपरर् ने की थी।

3. **कासि कण्डम -**

यह पुस्तक कासी काण्डम के नाम से भी जाना जाता है। इस पुस्तक के लेखक अदिवीर राम पांडियर हैं। वे 16वीं शताब्दी के कवि थे। कण्डम का अर्थ है टुकड़ा या भाग। काशी से संबंधित विषय को बताने वाले खंड को 'कासि कण्डम' कहा गया। जब यह एक अलग पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया, तो इसे 'कासी कण्डम' के रूप में बुलाया गया। संस्कृत भाषा में शिव पुराण दस है। उनमें से एक है शंकर संहिता, जो बारह खंडों में विभाजित है। काशीकण्डम उस संहिता का चौथा भाग है। इसका तमिऴ् अनुवाद काशी कण्डम है। इसमें दो कांड शामिल हैं, अर्थात् पूर्वकाँड में 41 अध्यायों के साथ और उत्तर कांड में 59 अध्याय होते हैं। यह ग्रंथ 2526 विरुत्तप् पा से बना है।

यह काशी नगर के गौरव के बारे में बताता है और ब्रह्मचर्य, घरेलुता, महिला के लक्षण, शिष्टाचार, समय को समझना, इह जन्म और पर जन्म के आदर्श आदि के बारे में बताता है। जैसा कि लेखक से स्थानीय भाषा के स्रोत को अपनायी गयी है, इसलिए इस पुस्तक में उनकी कल्पना शक्ति के लिए अधिक स्थान नहीं है।

इस पुस्तक के कुछ गीतों को संकलित करके एक अलग पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अपने पांचवें अध्याय में अगत्तियर द्वारा रचित छे पद्य देवि लक्ष्मी की स्तुति में 'इलक्कुमी तोत्तिरम' के रूप में (21-31) हैं; दसवें अध्याय में, आठ पद्यों को 'शिवाट्टगम' के रूप में संकलित किया गया है जो पुत्र संपत्ति प्राप्त करने वाले भक्तों के द्वारा वे पदय् गाये जाते हैं। बहत्तरवें अध्याय को 'वच्चिर पंचरा कवसम' कहा जाता है। इसे बारह पद्य बनाकर 'शक्ति कवसम' के रूप में गाया जाता है। कासी कण्डम के भाग अलग किताब के रूप में प्रयुक्त हैं।

यह एक धार्मिक मान्यता है कि काशी में मृतक को देवी विशालाक्षी अपने कपड़ों से हवा प्रदान करती हैं विश्वनाथ उनके कानों में तारक मंत्र का उपदेश करके मुक्ति दिलाते हैं । यह पुस्तक कहती है कि, “इत तलम ऍय्दि इऱक्कुऩर् यारुम इळैप्पाऱ् उत्तरीयम् कॊडु मादुमै वीसिड उमैयोर्पाल्, वैत्तुव-

रुम् पॊरुळ् मेवरु तारह मऱैयोदि, मुत्तियळित्तिडुम इप्पदि यळविड मुयल्वारे।” इस प्रकार यह पुस्तक काशी शहर की विशेषता और विभिन्न सामाजिक रीति-रिवाजों और प्रथाओं को प्रकट करती है।

4. काशी का रहस्य -

यह ग्रंथ काशी की विशेषता को बताता है। यह महा विद्वान मीनाक्षी सुन्दरम पिळ्ळै से रचित है। इस किताब के लिए का. तिरुच्चिट्रम्बल ज्ञाऩियार ने टीका लिखी है। 1012 विरुत्तम छंद से रचित इस ग्रंथ में पायिरम, गुरु भक्ति स्वरूपम उरैत्त अध्यायम, काशी मान्मियम उरैत्त अध्यायम, तिरुमाल तिरुमहळुक्कु उपदेसित्त अध्यायम, सोसऩ्मा मुत्ति अडैन्द अध्यायम, महासेनन मुत्ति अडैन्द अध्यायम, नरनारायणर् नारदरुक्कु उपदेसित्त अध्यायम, परमसिवऩ पार्वति देवियारुक्कु उपदेसित्त अध्याम, , पंजक्कुरोस प्रदक्षण महिमैयुरैत्त अध्यायम, मण्डबऩ मुत्ति अडैऩ्द अध्यायम, पंजक्कुरोस प्रदक्षिण इयल्बुरैत्त अध्यायम, कासिवास नियमम् उरैत्त अध्याम, मादेसऩ मुत्ति अडैन्द अध्यायम, सत्तपुरि मगिमैयुरैत्त अध्यायम, पिरमऩ मुदल मूवरुम पूसित्त अध्यायम, दुच्चोदा मुत्ति अडैऩ्द अध्यायम, नित्तिय यात्तिरै विदियुरैत्त अध्यायम, कासिदेवी वरम पॆट्र अध्यायम, कामकलै वरलाऱु उरैत्त अध्यायम, पुराणिकर इयल्बुरैत्त अध्यायम, पुण्णियकीर्त्ति मुत्ति पॆट्र अध्यायम, पादगक्कळुवाय उरैत्त अध्यायम, देवर्हल् उपदेसम पॆट्र अध्यायम, सऩातऩऩ मुत्ति अडैऩ्द अध्यायम, इरणिय करुप्पऩ मुदलोर मुत्ति पॆट्र अध्यायम, विट्टुणुसरुमऩ उपदेसम पॆट्र अध्यायम आदि होते हैं।

5. कासि यात्रा -

पाम्बन श्रीमद् कुमारगुरुदास स्वामी ने इस पुस्तक की रचना की है। यह पुस्तक सन् 1907 में प्रकाशित हुई थी। अत्तुविदप् पॊरुळ्, परंञोदिक्कणि आदि इस पुस्तक में होते हैं। इऩ्ऩिसै वॆण्बा, नेरिसै वॆण्बा, कट्टळैक् कलित्तुऱै आदि छंदों से इस पुस्तक की रचना हुई है। इस पुस्तक में 608 पद्य होते हैं।

6 . काशी महात्मियम या सिंहद्वाजऩ की कहानी -

यह पुस्तक 1906 में व.सु. चेंगलवरय पिळ्ळै द्वारा लिखित और प्रकाशित है। इस किताब के बारे में इसके लेखक ने कहा है कि, ‘मलैयालम भाषा में शिव पुराणम नाम की एक किताब है। यह सबसे प्रसिद्ध मलैयालम कवि रामानुज एलुत्तचन द्वारा लिखी गयी। उनका कार्यकाल लगभग 300 वर्षों

के अंतर्गत है। प्रमोथर कांड में होने वाले चरितम में बताया गया विषय इस शिवपुराण में भी बताया गया है जिसे तमिऴ् में वरतुंगराम पांडियर ने लिखा था। लेकिन प्रमोथर कांड में अप्रस्तुत एक दिव्य चरित्र इस शिवपुराण में बताया गया है। इस विचार से उसका अनुवाद तमिऴ् में किया गाय कि उस चरित्र को तमिऴ में अनुवाद करें तो शैव भक्तों को लाभ पहुँचेगा। इसलिए मैंने इसे तमिऴ् में लिखा था," इस पुस्तक में काशी की महानता, गंगा का महत्व और शिव की दयालुता आदि का उल्लेख है। यह पुस्तक यह भी कहती है कि जो लोग बिना पुत्र के कष्ट झेल रहे हैं यदि वे इस कथा को पढ़ें और दृढ़ संकल्प के साथ भगवान शिव की आराधना करें, तो उन्हें पुत्र और अन्य सभी आशीर्वाद प्राप्त होंगे।

7. काशी विश्वनाथ सदगम -

यह पुस्तक कऩकाराज अय्यर से रचित है। इसमें रक्षा पद्य को छोड़कर 109 पद्य होते हैं। वे पद्य आसिरिय विरुत्तम छंद से बने हैं। वे बहुत सरल हैं। इसमें कसिऩियै वाऴिवक्क वरनदी पेरुक्कियरुळ् कासि विसुवेस सिवमे कहकर काशी शहर की कीर्ति गायी गयी है। कवि भगवान गणेश की स्तुति करके पुस्तक की शुरुआत करते हैं। यद्यपि पुस्तक का नाम काशी विश्वनाथ सदगम रखा गया है, पर कवि ने न केवल भगवान शिव की महिमा के बारे में गाया है, बल्कि विष्णु के लिए बनाए गए मंदिरों, देवि के लिए बनाए गए मंदिरों, विष्णु के अवतार, भक्त संतों के बारे में, भगवान कार्तिकेय के मंदिरों के बारे में, जैन संतो के स्थान आदि के बारे में भी गाया है। इसके अलावा, उन्होंने कन्याकुमारी से लेकर हिमालय तक सभी तीर्थ स्थानों के बारे में गाए हैं। यही नहीं उन्होंने लंका में स्थित कदिर्गामम जैसे तीर्थ स्थानों के बारे मे भी गाए हैं। यह लेखक के जनमानस के स्वभाव और राष्ट्रीय एकता की भावना को दर्शाता है। पुस्तक में कोई वर्णन नहीं है। इसके पद्य सब अर्थगर्भित और सुन्दर शब्दों से संरचित होते हैं। लेखक ने व्यक्तिगत रूप से सभी मंदिरों और शहरों का दौरा किया है और अपने गीतों में उन्होंने जो देखा उसका उल्लेख किया है।

8. श्री काशी यात्रा दीपम्

यह ग्रंथ श्री काशी वासी कन्दैया स्वामी जी द्वारा संस्कृत से तमिऴ में अनूदित करके सन् 1904 में श्री काशी में रेशम पीतांबर के व्यापारी

के.एस . मुत्तैया अण्ड् कम्पनी के मालिक कळन्दै के.एस. मुत्तैया पिळ्ळै के निवेदन पर चेन्नई ताम्सन कम्पनी द्वारा प्रकाशित है।

इस ग्रंथ पर प्रकाशित विज्ञापन भाग में इस पावन भूमि की महत्ता का उल्लेख ऐसा किया गया है, “इस पवित्र भूमि में हत्या-कपट- चोर-नशा-गुरु निंदन आदि पाँचों महापाप को करने वाले भी आकर गंगा में स्नान करके शिव के दर्शन करें पूर्व जन्म के पाप दूर हटकर सुफल प्राप्त होगा।” इस ग्रंथ में उल्लेख नित्य यात्रा से लेकर दक्षिण यात्रा तक सभी यात्रायें इह-पर सुख दिलाने वाले के रूप में होते हैं। इस ग्रंथ में 24 यात्रायें और उसके प्रतिफल उल्लेख किये गये हैं।

उपर्युक्त किताबों के अलावा काशी के बारे में कुछ अन्य पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं। लेकिन उनका पूरा विवरण उपलब्ध नहीं है।

1. कासिक् कदिर्काम वेलर तिरुवरुट्पा – सिवज्ञान देसिगर
2. कासित् तलत्तिल् कत्वारणत्तिल् ऐऴ़ुन्दरुळियिरुक्किऩ्ड्र 56 विनायह मूर्तिहळिऩ्न तिरुनामंगळ् – सिवाऩन्द मूर्ति
3. कासि विसुवनाथ स्वामि पेरिल पदिगम (आसिरिय विरुत्तम) – सुब्बुराय अय्यर
4. कासि यात्तिरै विळक्कम - मयिल्वाहऩप् पुलवर (याऴ़पाण के कवि, उनका समय 1779 – 1816)
5. कासित्तुण्डि विनायगर तिरुप्पाडल - आरुमुहनावलर से संपादित है
6. कासित्तुण्डि विनायहर पदिहम - सिवाऩन्द तेसिहर

कहावतों में काशी -

साहित्य के अलावा काशी का उल्लेख लोगों की मौखिक और बोलचाल की कहावतों में भी मिलता है। इससे हम जान सकते हैं कि काशी की विशेषता तमिऴ़् लोगों के मन में बसी हुई है। कहावतें इस प्रकार हैं:

1. काशी दो अक्षर है; देखने में कितने दिन लगेंगे?
2. तिरुवैयारु काशी के लिए अधिक है
3. काशी जाकर दही लाने के बराबर
4. काशी जाकर भी पाप मिटा नहीं
5. क्या काशी जाकर भी मूर्ख तपस्वी के पैरों पर पड़ना है?
6. काशी गयी नकदी गाय की तरह
7. काशी चले जाओ तो पांव हिला सकते हो; पैर हिलाते हिलाते कंधे भी हिला सकते
8. काशी भी जाओगे तो भी एक चम्मच आधा पैसा
9. काशी चले तो भी गति का कोई उपाय नहीं
10. काशी चले त भी बुरा कर्म नहीं मिटेगा
11. काशी जाते तो भी कंधे पर झोला है?
12. काशी जाते तो भी अपना पाप अपने साथ होता है
13. कासी से भी थोडा बडा है तिरुप्पूवणम
14. जो काशी में है वह आँखें चुभाता है तो कांचीपुरम में रहने वाला हाथ बढाकर जाएगा/वह चला गया
15. काशीवासी ने आँख चुभा ली और कांची से हाथ बढाकर निकल गया
16. काशी में मरने से मुक्ति; कमला में जन्म लेने से मुक्ति
17. काशी में दंडन; प्रयाग में मुंडन; गया में पिंडन
18. अविनासी जो है वह काशी में रहता है
19. गंगा बराबर की कोई नदी नहीं और काशी समान कोई शहर नहीं
20. काशी रामेश्वरम जाने पर भी सूखी मछली की बद्बू नहीं हटती

हिंदुओं के जीवन के साथ काशी पूर्ण रूप में घुलमिल गया है। पवित्र नदी गंगा काशी शहर को घेरकर बहती है। यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि काशी शहर को काशी से गर्व है या काशी को गंगा से गर्व है। सभी भारतीय साहित्य गंगा और काशी के बारे में बताते हैं। काशी शहर का नाम लोगों के नाम के रूप में भी प्रयोग किया जाता है, जो इस स्थान के महत्व को प्रकट करता है। तमिळ् साहित्य और शिलालेखों द्वारा यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि काशी शहर को वाराणासी, वाराणसी, वारणवासी, वारणम आदि के नाम से बुलाया जाता था।

******

अनुबंध

तमिळ्नाडु में काशी के नाम पर स्थित विभिन्न स्थान

शिवकाशी

यह शहर विरुदुनगर जिले में स्थित है। यहाँ का मंदिर राजा हरिकेसरी पराक्रम पांडिय से बनवाया गया । राजा को भगवान शिव के लिए तेन् काशी नामक स्थान में एक मंदिर स्थापित करने की बडी इच्छा थी। वह उसके लिए शिवलिंग ले आने के लिए काशी गया था। शिवलिंग को लेकर वापस लौटते समय वह आराम करना चाहा। इसलिए भगवान शिव के पसंद के बिल्व पेड के नीचे उस शिवलिंग को रखकर आराम किया। थोडे समय के बाद जब वह निकल पडा तब उस शिवलिंग को उठा ले आयी गाय वहाँ से रद्दी भर भी हटने तैयार नहीं थी। राजा ने सोचा कि वह स्थान भगवान शिव का पसंद हो सकता है। इसलिए उसने उसी स्थान पर उस शिवलिंग को स्थापित किया। काशी से लाये गये शिवलिंग स्थापित वह स्थान आज शिवकाशी के नाम से अभिहित किया जाता है।

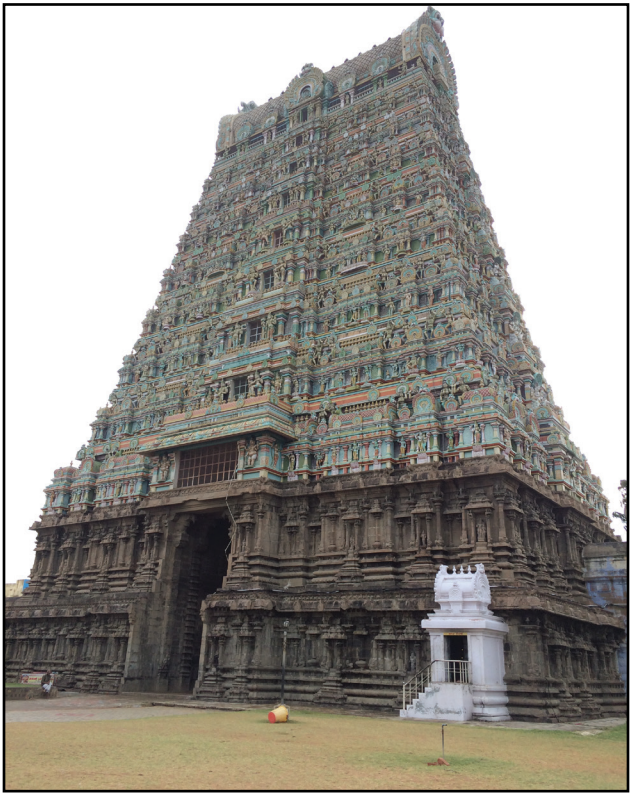

तेन्न् काशी

एक जमाने में सेण्बगप् पोऴिल् और उसके आसपास के स्थान पर शासन कर रहे राजा पराक्रम पांडियन् के सपने में भगवान शिव प्रकट हुए। उन्होंने उसे सूचित किया कि पांडिय राजाओं के पूर्वजों से पूजित शिवलिंग सेण्बगवन में है। किले से रेंगकर जाती चींटी का पीछा करने पर वहाँ उस शिवलिंग को देख सकते हैं। उस शिवलिंग के लिए एक मंदिर स्थापित करना उत्तम है।

भगवान की सूचना के अनुसार राजा पराक्रम पांडिय द्वारा तेन्न् काशी मंदिर राजा उसके पूर्वजों से पूजित शिवलिंग के लिए बनवाया गया। इस शहर का नाम भी मंदिर के इस नाम से ही बुलाया जाता है।

उत्तर काशी में सिर्फ मरने वाले को ही मुक्ति प्राप्त होती है। पर तेन्न् काशी में जन्म लेने वाले, रहने वाले, देखने वाले और मरने वाले आदि सभी को मुक्ति प्राप्त होती है।

वृद्धाचलम् (वृद्ध काशी)

यह स्थान तिरु मुदु कुन्ड्रम , पळमलै आदि के साम से बुलाया जाता है। यह स्थान कडलूर में है। यह स्थान काशी के बराबर का पवित्र स्थान है।

तिरुप्पूवणम् (पुष्पवन काशी)

यह स्थान शिवगंगै जिले में वैगै नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। इसकी महत्ता काशी से थोडा बढकर माना जाता है।

कडम्बर मंदिर (दक्षिण काशी)

काशी के बराबर आदर प्राप्त यह मंदिर करूर जिले में कुळित्तलै नामक गाँव में स्थित है। यह मंदिर दक्षिण दिशा की ओर स्थित है।

श्री काशी नाट्टुक्कोट्टै नगर क्षत्रम

संत कुमरगुरुपरर्

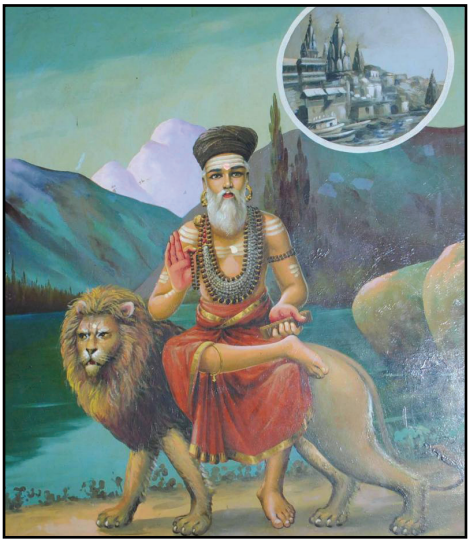

केदार घाट

श्री कुमारस्वामी मठ

राजा शरभोजी

मणिकर्णिका मंदिर, तंजावूर

भारतीयार

कवि भारतीयार निवास स्थान - शिव मठ, वाराणसी

काशी नाम केंद्रित तमिऴ ग्रंथ

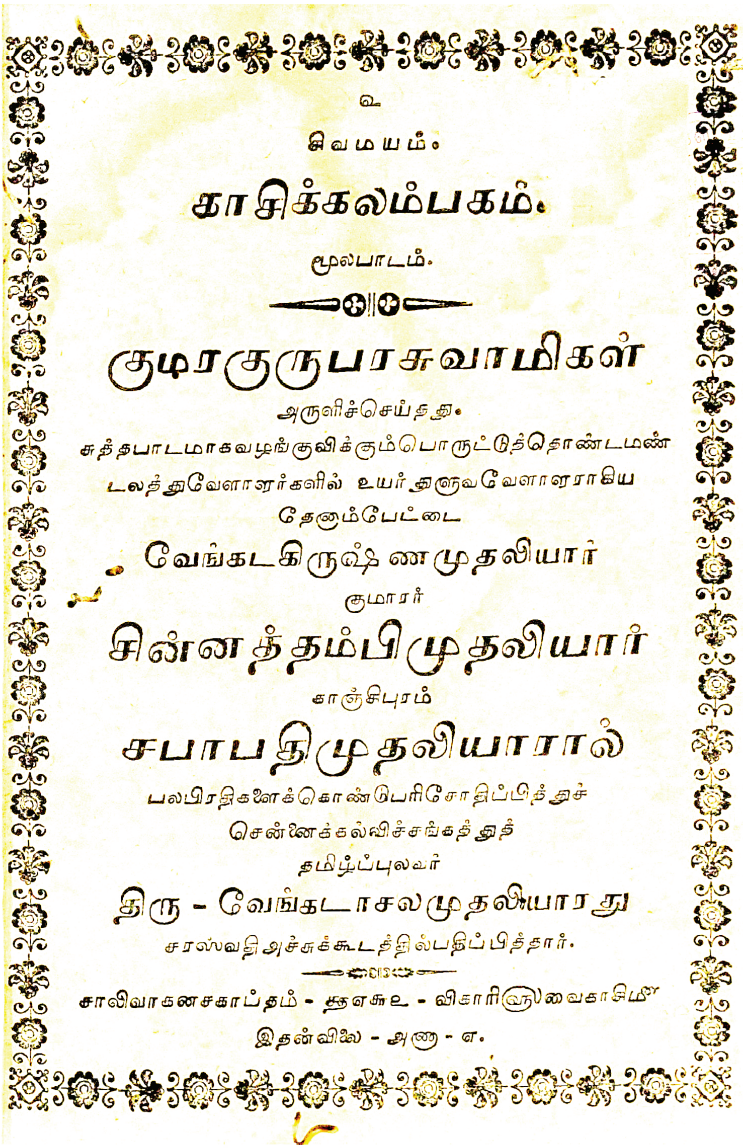

உ

சிவமயம்.

காசிக்கலம்பகம்.

மூலபாடம்.

குமரகுருபரசுவாமிகள்

அருளிச்செய்தது.

சுத்தபாடமாகவழங்குவிக்கும்பொருட்டுத்தொண்டமண்
டலத்துவேளாளர்களில் உயர்குலவேளாளராகிய

தேனம்பேட்டை

வேங்கடகிருஷ்ணமுதலியார்

குமாரர்

சின்னத்தம்பிமுதலியார்

காஞ்சிபுரம்

சபாபதிமுதலியாரால்

பலபிரதிகளைக்கொண்டுபரிசோதிப்பித்துச்
சென்னைக்கல்விச்சங்கத்துத்
தமிழ்ப்புலவர்

திரு - வேங்கடாசலமுதலியாரது

சரஸ்வதிஅச்சுக்கூடத்திற்பதிப்பித்தார்.

சாலிவாகனசகாப்தம் - ௲எகூஉ - விகாரிஞுவைகாசிமீ

இதன்விலை - அணா - எ.

உ

கணபதி துணை.

திருச்சிற்றம்பலம்.

திருக்கைலாசபரம்பரைத்

திருவண்ணாமலையாதீனத்து

ஆறுமுகசுவாமிகளால்

அருளிச்செய்யப்பட்ட

தலயாத்திரைப் பொதுவிதி.

காசிமான்மியம்.

இவை

பறங்கிப்பேட்டை

ந. தெய்வநாயகமுதலியாரால்

சென்னபட்டணம்:

வித்தியாநுபாலனயந்திரசாலையில்

அச்சிற்பதிப்பிக்கப்பட்டன.

(*Copyright Reserved.*)

1882.

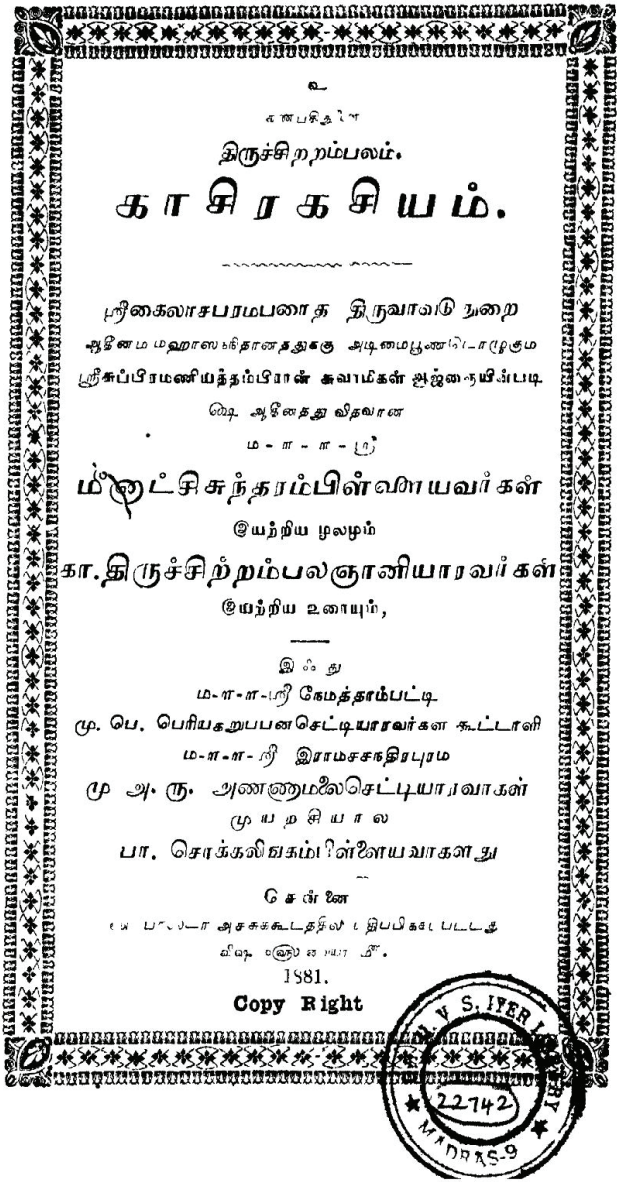

உ

கணபதிதுணை

திருச்சிற்றம்பலம்.

காசிரகசியம்.

ஸ்ரீகைலாசபரம்பரைத் திருவாவடுதுறை
ஆதீனம் மஹாஸந்நிதானத்துக்கு அடிமைபூண்டொழுகும்
ஸ்ரீசுப்பிரமணியத்தம்பிரான் சுவாமிகள் ஆஜ்ஞையின்படி
மேற்படி ஆதீனத்து வித்வான்
ம-ள-ள-ஸ்ரீ
மீனாட்சிசுந்தரம்பிள்ளையவர்கள்
இயற்றிய மூலமும்
கா. திருச்சிற்றம்பலஞானியாரவர்கள்
இயற்றிய உரையும்,

இஃது
ம-ள-ள-ஸ்ரீ கோமத்தாம்பட்டி
மு. பெ. பெரியகருப்பன்செட்டியாரவர்கள் கூட்டாளி
ம-ள-ள-ஸ்ரீ இராமச்சந்திரபுரம்
மு. அ. ரு. அண்ணாமலைசெட்டியாரவர்கள்
முயற்சியால்
பா. சொக்கலிங்கம்பிள்ளையவர்களது

சென்னை
[illegible] அச்சுக்கூடத்தில் பதிப்பிக்கப்பட்டது.
விஷு வைகாசி மீ.
1881.

Copy Right

V. S. IYER LIBRARY
22742
MADRAS-9

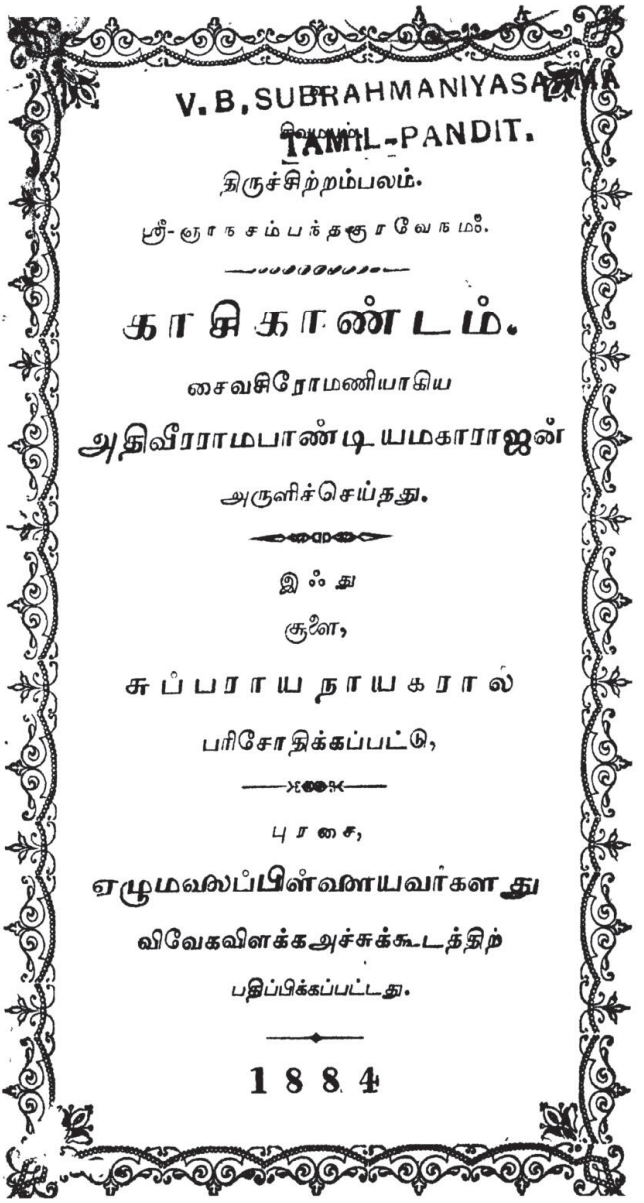

V. B. SUBRAHMANIYASARMA
TAMIL-PANDIT.

திருச்சிற்றம்பலம்.

ஸ்ரீ-ஞானசம்பந்தகுரவே நமஃ.

காசிகாண்டம்.

சைவசிரோமணியாகிய

அதிவீரராமபாண்டியமகாராஜன்

அருளிச்செய்தது.

இஃது

சூளை,

சுப்பராயநாயகரால்

பரிசோதிக்கப்பட்டு,

புரசை,

ஏழுமலைப்பிள்ளையவர்களது

விவேகவிளக்கஅச்சுக்கூடத்திற்

பதிப்பிக்கப்பட்டது.

1884

உ

சிவமயம்.

திருச்சிற்றம்பலம்.

ஸ்ரீ விசுவேசர்துணை.

ஸ்ரீ காசியாத்திரா தீபம்.

இஃது

ஸ்ரீகாசிவாசி

கந்தையாஸ்வாமி அவர்களால்

வடமொழியிலிருந்து தமிழில் மொழிபெயர்க்கப்பட்டதை

ஸ்ரீகாசியில்

பட்டு பீதாம்பர வர்த்தகர்களாகிய

கெ. எஸ். முத்தையா அண்டு கம்பெனியின்

சொந்தக்காரராகிய

“களந்தை”

K. S முத்தையாபிள்ளை அவர்களின்

வேண்டுகோளின்படி

சென்னை

தாம்ஸன் கம்பெனியாரின்

மினேர்வா அச்சுக்கூடத்தில்

பதிப்பிக்கப்பட்டது.

1904

இசன்விலை.] [அணா 6.

உ

கணபதிதுணை.

சிவமயம்.

காசி மாஹாத்மியம்

அல்லது

சிம்ஹத்வஜன் கதை.

வ. சு. செங்கல்வராய பிள்ளை, எம். ஏ.

எழுதியது.

சென்னை :

எம். வி. நாயுடு அண்டு கம்பெனியிற்

பதிப்பித்தது.

1906.

[*All rights reserved.*]

MAHAMAHOPADHYAYA
DR. U.V. SWAMINATHA IYER LIBRARY
...IVANMIYUR ... MADRAS-4...

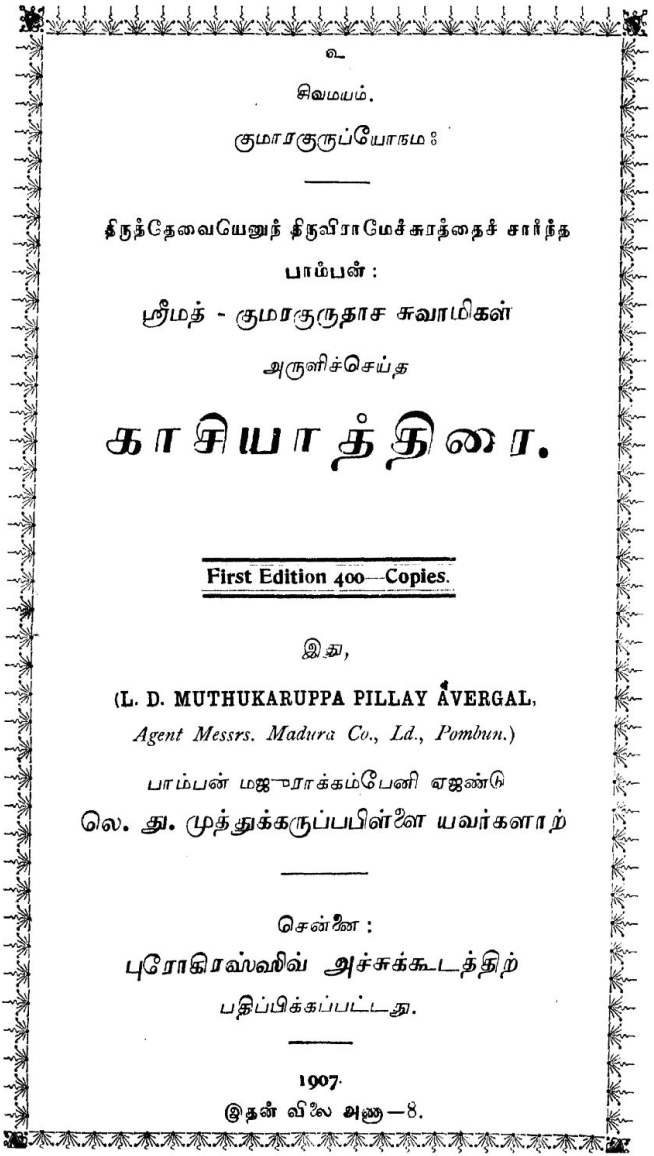

உ

சிவமயம்.

குமாரகுருப்யோநமஃ

திருத்தேவையெனுந் திருவிராமேச்சுரத்தைச் சார்ந்த

பாம்பன் :

ஸ்ரீமத் - குமரகுருதாச சுவாமிகள்

அருளிச்செய்த

காசியாத்திரை.

First Edition 400—Copies.

இது,

(L. D. MUTHUKARUPPA PILLAY AVERGAL,

Agent Messrs. Madura Co., Ld., Pombun.)

பாம்பன் மஜுராக்கம்பேனி ஏஜண்டு

லெ. து. முத்துக்கருப்பபிள்ளை யவர்களாற்

சென்னை :

புரோகிரஸ்ஸிவ் அச்சுக்கூடத்திற்

பதிப்பிக்கப்பட்டது.

1907.

இதன் விலை அணா—8.

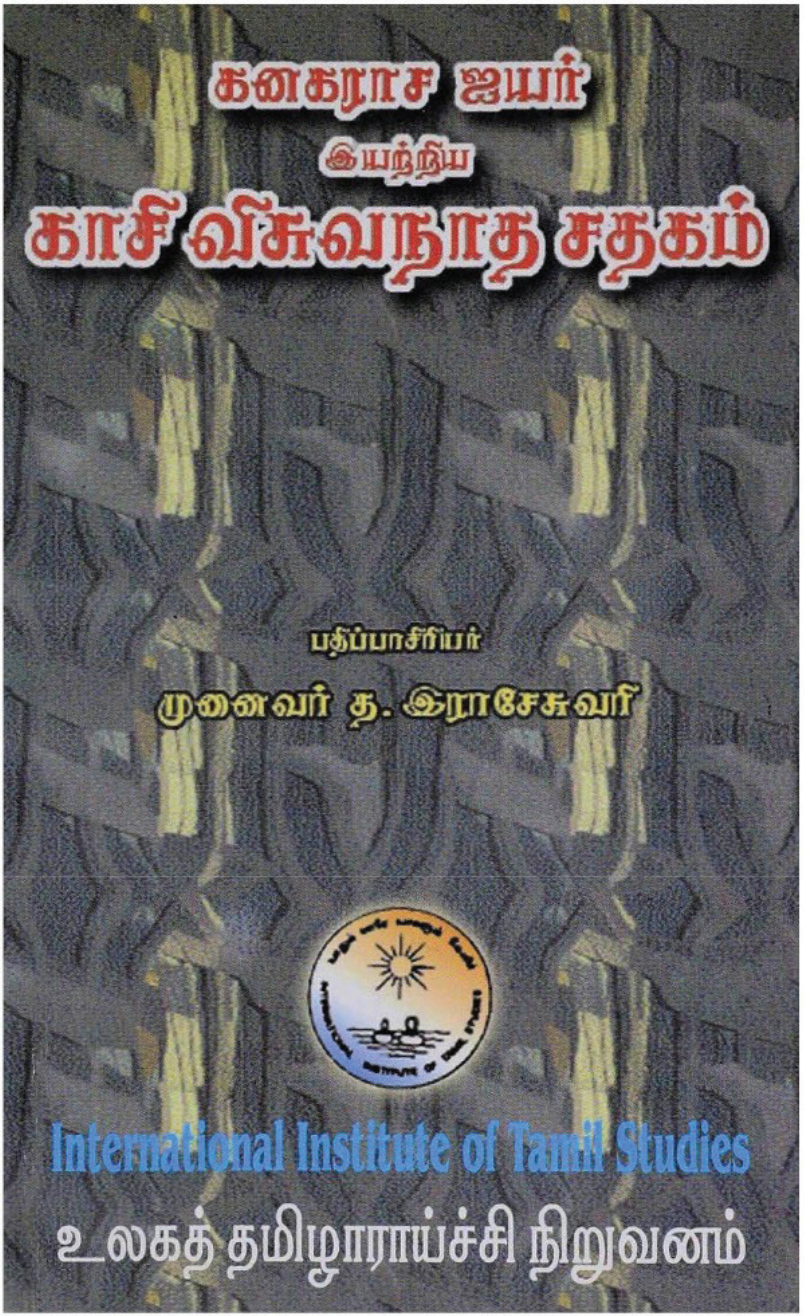
கனகராச ஐயர்
இயற்றிய
காசி விசுவநாத சதகம்
பதிப்பாசிரியர்
முனைவர் த. இராசேசுவரி
International Institute of Tamil Studies
உலகத் தமிழாராய்ச்சி நிறுவனம்

प्रकाशन

केंद्रीय शास्त्रीय तमिळ संस्थान
सेम्मोळिच चालै, पेरुम्बाक्कम
चेन्नै – 600 100

9 788119 249688